BA Part III (H)
Paper III

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

Lecture II

जनजाति (परिभाषाएं) => विभिन्न विद्वानों ने जनजातियों की प्रकृति को समझाने एवं स्पष्ट करने के लिए परिभाषित किया है जो इस प्रकार है -

डी. एन. मजूमदार के अनुसार, " जनजाति परिवारों का एक ऐसा समूह है जिसका एक सामान्य नाम होता है, जिसके सदस्य एक निश्चित क्षेत्र में निवास करते हैं, एक सामान्य भाषा बोलते हैं तथा विवाह और व्यवसाय के विषय में कुछ विशेष नियमों का पालन करते हैं।

गिलीन एवं गिलीन के अनुसार, " जनजाति उन स्थानीय समूहों से बनने वाला एक बड़ा समुदाय है जो एक

सामान्य क्षेत्र में निवास करता है, एक सामान्य भाषा का प्रयोग करता है तथा जिसकी एक सामान्य संस्कृति होती है।

राल्फ पिडिंगटन के अनुसार," जनजाति को व्यक्तियों के एक ऐसे समुदाय के रूप में स्पष्ट किया जा सकता है जो एकसमान भाषा बोलता हो, समान भू-भाग में निवास करता हो तथा जिसकी संस्कृति में समानता पायी जाती हो।

इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि जनजाति एक अन्तर्विवाही और क्षेत्रीय समूह है जिसके सदस्य भू-भाग, भाषा संस्कृति, धार्मिक विश्वासों और व्यवसाय की समानता के कारण अपनी अलग पहचान बनाये हुए है।